□ **महाकाव्य**—कवि विस्तृत जन-जीवन की सामग्री लेकर जब उसे कलात्मक रूप प्रदान करता है वह गद्य में उपन्यास का रूप धारण करता है और पद्य में महाकाव्य का। भारतीय काव्यशास्त्र में सर्वप्रथम भामह ने सर्गबद्ध रचना को महाकाव्य कहा। उनके अनुसार इसका आकार बड़ा होना चाहिए। इसमें महान चरित्र होता है। इसमें अलंकारयुक्त, अग्रामीण (शिष्ट) भाषा का प्रयोग होता है। इसमें राजदरबार, युद्ध आदि का विस्तृत वर्णन होना चाहिए। इसमें पाँचों नाट्य सन्धियों का समावेश होना चाहिए। यह अनतिव्याख्येय अर्थात् विश्लेषणपरक घटनाओं से सम्पृक्त होना चाहिए। इसमें नायक का अभ्युदय रहता है तथा किसी अन्य पात्र का उत्कर्ष दिखाने के लिए नायक का वध नहीं किया जाता।

दण्डी ने महाकाव्य की परिभाषा में भामह द्वारा प्रस्तुत सभी घटकों को समाविष्ट करते हुए इसके बहिरंग पर भी बल दिया, जैसे वर्णन-वैविध्य-अलंकृति, चमत्कार आदि।

रुद्रट ने महाकाव्य के लक्षणों में महदुद्देश्य, महच्चरित्र, महती घटना और समग्र जीवन का रसात्मक चित्रण-इन चार प्रमुख तत्वों का निर्देश करके अपने दृष्टिकोण की व्यापकता और मौलिकता का परिचय दिया।

विश्वनाथ ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा प्रस्तुत लक्षण-घटकों का संकलन करते हुए महाकाव्य की परिभाषा में निम्नांकित संकेत प्रस्तुत किए—

(1) काव्यारम्भ में नमस्कार, मंगलाचरण, आशीर्वचन, सज्जन-स्तुति, दुर्जन-निन्दा आदि।
(2) कथानक की ऐतिहासिकता।
(3) कथावस्तु का सर्गों में विभाजन।
(4) नाट्य संधियों का निर्वहण।
(5) नायक का धीरोदात्त गुणों से युक्त एवं उच्चकुलीन होना, एक वंश के एकाधिक राजा भी नायक हो सकते हैं।
(6) शृंगार, वीर एवं शान्त रसों में से एक का अंगी रूप तथा अन्य रसों का अंग रूप में प्रतिपादित होना।
(7) चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति।
(8) सर्ग-संख्या आठ से अधिक तथा सर्गान्त में छन्द-परिवर्तन।
(9) सन्ध्या, सूर्य, रजनी, प्रदोष, प्रातः, मध्याह्न, मृगया, यात्रा आदि का सांगोपांग वर्णन।
(10) महाकाव्य का नामकरण कवि, कथा अथवा नायक के आधार पर तथा सर्गों का नामकरण कथा के आधार पर।

Scanned with CamScanner

विश्वनाथ द्वारा प्रस्तुत यह परिभाषा मौलिक न होती हुई भी नितान्त व्यापक है, अतः आज इसे ही आदर्श माना जाता है।

इधर आधुनिक हिन्दी काव्यशास्त्र में संस्कृत की उक्त परम्परा को स्वीकार करते हुए भी पाश्चात्य साहित्य एवं काव्यशास्त्र से प्रेरणा ग्रहण करते हुए महाकाव्य के सम्बन्ध में कतिपय नूतन धारणाएँ प्रस्तुत की गई है।

सर्वप्रथम आचार्य शुक्ल ने महाकाव्य में केवल चार तत्वों को महत्व प्रदान किया— 1. इतिवृत्त 2. वस्तु-व्यापारवर्णन, 3. भाव-व्यंजना और 4. संवाद। इनके अतिरिक्त उन्होंने परोक्ष रूप से सन्देश की महत्ता एवं शैली की प्रौढ़ता को भी महाकाव्य का प्रमुख लक्षण माना।

डॉ० नगेन्द्र ने लौंजाइनस के उदात्त सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए महाकाव्य के पाँच आधारभूत तत्व माने—1. उदात्त कथानक, 2. उदात कार्य अथवा उद्देश्य, 3. उदात्त चरित्र, 4. उदात्त भाव और 5. उदात्त शैली।

Scanned with CamScanner